SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

विभिन्न आयु वर्ग के किशोर बालक एवं बालिकाओं के नेतृत्व संबंधी व्यवहार का अध्ययन

प्रीति यादव, शोधार्थी,
गृह विज्ञान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :

प्रीति यादव, शोधार्थी,
गृह विज्ञान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/11/2019
Revised on : -----
Accepted on : 28/11/2019
Plagiarism : 04% on 25/11/2019

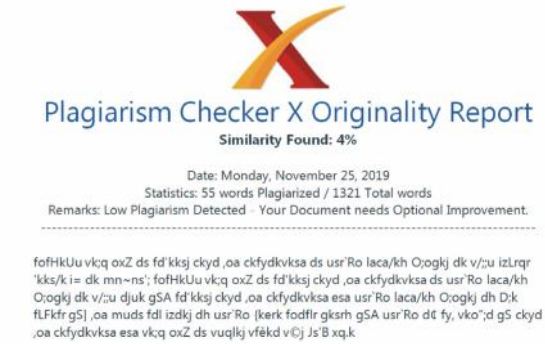
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 4%

Date: Monday, November 25, 2019
Statistics: 55 words Plagiarized / 1321 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

fofHkUu vk;q oxZ ds fd'kksj ckyd ,oa ckfydkvksa ds usr'Ro laca/kh O;ogkj dk v/;;u izLrqr 'kks/k i= dk mn~ns'; fofHkUu vk;q oxZ ds fd'kksj ckyd ,oa ckfydkvksa ds usr'Ro laca/kh O;ogkj dk v/;;u djuk gSA fd'kksj ckyd ,oa ckfydkvksa esa usr'Ro laca/kh O;ogkj dh D;k fLFkfr gS] ,oa muds fdl izdkj dh usr'Ro {kerk fodflr gksrh gSA usr'Ro d¢ fy, vko";d gS ckyd ,oa ckfydkvksa esa vk;q oxZ ds vuqlkj vfèkd v©j Js'B xq.k

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य विभिन्न आयु वर्ग के किशोर बालक एवं बालिकाओं के नेतृत्व संबंधी व्यवहार का अध्ययन करना है। किशोर बालक एवं बालिकाओं में नेतृत्व संबंधी व्यवहार की क्या स्थिति है, एवं उनके किस प्रकार की नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। नेतृत्व के लिए आवश्यक है बालक एवं बालिकाओं में आयु वर्ग के अनुसार अधिक और श्रेष्ठ गुण हों तथा नेतृत्व व्यवहार श्रेष्ठ हो तथा इस व्यवहार की समूह के अन्य सदस्यों द्वारा प्रशंसा की जा रही हो। सामाजिक कार्यक्रमों में नेता अन्य सदस्यों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील दिखलाई पड़ते हैं। किशोरावस्था के बालक–बालिकाएं यह पसंद करते हैं कि उनका नेता दिखने में अच्छा, स्टाइल वाला, अच्छे पहनावे वाला, अधिक बुद्धि वाला, अधिक शिक्षा वाला और अधिक परिपक्व होना चाहिए।

मुख्य शब्द :–

बालक–बालिकाएं, नेतृत्व संबंधी व्यवहार ।

केले (1963) के अनुसार : 'किशोरावस्था के नेताओं में अनके गुण पाये जाते हैं, जैसे–विश्वसनीयता, वफादारी, बर्हिमुखता, अनेक रूचियाँ, आत्मविश्वास, निर्णय गति, खेल की भावना, सामाजिकता, विनोदाभाव, मौलिकता, दक्षता, अनुकूलता, सहयोग, सजीवता, दृढ़ाग्रही और कुशलता' जहाँ सोलह सत्रह वर्ष की अवस्था में समूह में लड़के–लड़कियाँ दोनों ही होते हैं वहाँ लड़कियां लड़कियों को और लड़के लड़कों को ही नेता चुनना पसन्द करते हैं।

नेतृत्व की परिभाषा **बर्नार्ड** के शब्दों में 'वस्तुतः मैंने कभी कोई नेता नहीं देखा जो यह कह सके कि वह

क्यों नेता है, न अनुयायी ही परी तरह यह कह सकते हैं कि वे क्यों अनुसरण करते हैं।'

टेरी के अनुसार, 'पारस्परिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तत्परता से प्रयत्न करने के लिए नेतृत्व लोगों को प्रभावित करने की क्रिया है।'

नेतृत्व का विकास :–

कुछ व्यक्तियों में नेतृत्व की प्रवृत्ति जन्मजात होती है तथा कुछ व्यक्तियों में इसका विकास बाद में होता है। किशोर बालक अपनी क्षमताओं व योग्यताओं का प्रयोग कर एक आदर्शवादी नेता बन सकता है।

किशोरों में नेतृत्व की प्रवृत्ति का विकास अपने आदर्शवादी व्यक्तियों के अनुकरण से होता है। किशोरावस्था में नेतृत्व विकास के लिये दो परिस्थिति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं– पहली पूर्व अनुभवों का प्रभाव और दूसरा घर पर दी गई विधियों द्वारा सिखाना। नेतृत्व व्यवहार की जड़ें पूर्व बाल्यावस्था में ही देखी जाती हैं। जिन बालक के नेतृत्व की प्रवृत्ति पाई जाती है वह अपने कार्य के प्रति अधिक संवेदनशील व जिम्मेदार होते हैं।

नेतृत्व के प्रकार :–

नेतृत्व के क्षेत्र :–

राजनीतिक, धार्मिक, मानवीय, औद्योगिक आदि में पाया जाता है। हमारे अध्ययन का सम्बम्ध केवल प्रशासकीय नेतष्त्व की समस्याओं से है, जिसके प्रकार निम्न प्रकार हैं –

1. औपचारिक नेतृत्व :– औपचारिक नेतृत्व उच्च पदाधिकारियों के पास होता है। उच्च पदाधिकारियों को अधीनस्थ पदाधिकारियों पर नियंत्रण तथा निर्देशन की व्यापक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं।
2. अनौपचारिक नेतृत्व :– जब औचपारिक नेतृत्व असफल हो जाता है और उसकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाती है तथा वह अपने अनुयायियों को संतुष्ट नहीं कर पाता है तथा उसकी आलोचना होने लगती है और वह अधीनस्थ पदाधिकारियों के लिए असहनीय हो जाता है।
3. सत्तावादी नेतृत्व :– जहाँ नेतृत्व का आधार सत्ता होता है। सत्तावादी नेतृत्व में संगठन संबंधी महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं अपनी स्वेच्छा से करता है।
4. प्रजातान्त्रात्मक नेतृत्व :– प्रजातन्त्रात्मक नेतृत्व निर्णय स्वेच्छा से न है तथा अनुयायियों द्वारा दिए गए निर्णयों के प्रकाश में नीतियों का निश्चय करता है।
5. बाह्य नेतृत्व :– कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में एक विभाग या संगठन अपने से बाहर के किसी नेता का नेतृत्व स्वीकार कर लेते हैं।
6. आन्तरिक नेतृत्व :– आन्तरिक नेतृत्व में नेता अपने ही संगठन से लिया जाता है, ऐसा अपने अनुयायियों की समस्याओं से पूरी तरह परिचित होता है।
7. प्रत्ययकारी तथा सृजनात्मक नेतृत्व :– प्रत्ययकारी नेतृत्व में नेता को नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

नेतृत्व की विधियों में सबसे महत्वपूर्ण जनता की सेवा है। जनता ऐसे नेता में रुचि लेती है, जो कि उसका साथ देता है। नेता को ऐसे कार्य करना चाहिए, जिससे जनता का भला हो और उसकी आशा के अनुकूल हो। किशोर बालक एवं बालिकाओं में नेतृत्व व्यवहार के गुण अच्छे से विकसित हों तो वे नेतृत्व कर समाज एवं राष्ट्र की उन्नति में अपना अहम योगदान दे सकते हैं। विभिन्न आयु वर्ग के किशोर बालक एवं बालिकाओं में आयु के अनुसार नेतृत्व व्यवहार के गुण कुछ कम या अधिक हो सकते हैं।

शोध के उद्देश्य :–

विभिन्न आयु वर्ग के किशोर बालकों एवं बालिकाओं के नेतृत्व संबंधी व्यवहार का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना :–

विभिन्न आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं की नेतृत्व सम्बन्धी व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श :–

आगरा नगर के 150 बालक तथा 150 किशोर बालिकाओं का दैव निदर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के आधार पर निर्धारण किया गया। चयनित बालक बालिकायें जिनकी आयु 18 से 21 वर्ष है, का शोध हेतु चयन किया गया है।

उपकरण :–

शोध में डॉ. हसीन ताज द्वारा निर्मित 'लीडरशिप इफेक्टिव स्केल' का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित सांख्यकीय तकनीकों का सूत्रों के अनुसार प्रयोग किया गया है–

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

परिकल्पना का सत्यापन :–

विभिन्न आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं की नेतृत्व सम्बन्धी व्यवहार के वर्गीकरण को दर्शाती तालिका

Age wise	Leadership Effectiveness Scale			
		Boys	Girls	t-test
18	Mean	292.26	291.68	0.12
	SD	27.12	22.81	
19	Mean	290.31	294.34	0.66
	SD	32.01	22.84	
20	Mean	285.92	293.59	1.15
	SD	28.46	19.60	
21	Mean	289.00	300.66	1.64
	SD	26.48	27.70	

तालिका में विभिन्न आयु वर्ग के किशोरों की नेतृत्व सम्बन्धी व्यवहार के आधार पर चयनित 300 प्रतिदर्शियों को वर्गीकृत किया गया है जो इस प्रकार है। 18 वर्षीय बालक–बालिकाओं के आधार पर बालक बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुणों के मध्यमान बालक 292.26 एवं बालिकाएं 291.68 प्राप्त हुआ है जिसमें बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुण बालकों की अपेक्षा कम अच्छा हैं इनके मध्य टी परीक्षण द्वारा प्राप्त मान 0.12 से यह स्पष्ट होता है कि उक्त मान आवश्यक मान .05 स्तर पर 1.98 एवं 0.1 स्तर पर 2.62 से कम है अतः 18 वर्षीय वर्ग के बालक एवं बालिकाओं के मध्य नेतृत्व प्रभावी गुणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

19 वर्षीय बालक–बालिकाओं के आधार पर बालक बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुणों के मध्यमान बालक 290.31 एवं बालिकाएं 294.34 प्राप्त हुआ है जिसमें बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुण बालकों की अपेक्षा अधिक अच्छा हैं इनके मध्य टी परीक्षण द्वारा प्राप्त मान 0.66 से यह स्पष्ट होता है कि उक्त मान आवश्यक मान .05 स्तर पर 1.99 एवं 0.1 स्तर पर 2.64 से कम है अतः 19 वर्षीय वर्ग के बालक एवं बालिकाओं के मध्य नेतृत्व प्रभावी गुणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

20 वर्षीय बालक–बालिकाओं के आधार पर बालक बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुणों के मध्यमान बालक 285.92 एवं बालिकाएं 293.59 प्राप्त हुआ है जिसमें बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुण बालकों की अपेक्षा अधिक अच्छा हैं इनके मध्य टी परीक्षण द्वारा प्राप्त मान 1.15 से यह स्पष्ट होता है कि उक्त मान आवश्यक मान .05 स्तर पर 2.09 एवं 0.1 स्तर पर 2.83 से कम है अतः 20 वर्षीय वर्ग के बालक एवं बालिकाओं के मध्य नेतृत्व प्रभावी गुणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

21 वर्षीय बालक–बालिकाओं के आधार पर बालक बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुणों के मध्यमान बालक 289.00 एवं बालिकाएं 300.66 प्राप्त हुआ है जिसमें बालिकाओं के नेतृत्व प्रभावी गुण बालकों की अपेक्षा अधिक अच्छा हैं इनके मध्य टी परीक्षण द्वारा प्राप्त मान 1.64 से यह स्पष्ट होता है कि उक्त मान आवश्यक मान .05 स्तर पर 2.09 एवं 0.1 स्तर पर 2.83 से कम है अतः 21 वर्षीय वर्ग के बालक एवं बालिकाओं के मध्य नेतृत्व प्रभावी गुणों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

विभिन्न आयु वर्ग के बालक एवं बालिकाओं की नेतृत्व सम्बन्धी व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकृत होती है।

सुझाव :–

1. किशोरों में नेतृत्व व्यवहार के लिए उन्हें अच्छा सामाजिक परिवेश मिलना चाहिए ताकि वे अपने गुणों को विकसित कर सकें।
2. विद्यालय में शिक्षकों किशोर विद्यार्थियों पर ध्यान देना चाहिए ताकि उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास हो सके।
3. किशोरावस्था, जीवन विकास की सब से जटिल एवं नाजुक अवस्था होती है। ऐसे में बच्चों के साथ सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। बच्चों को जीवन में नैतिक, लिंग शिक्षा (अप्रत्यक्ष रूप से) देकर उसके गुण दोषों से अवगत कराना चाहिए।
4. कक्षा शिक्षण में छात्रों के साथ सख्ती या दण्डात्मक व्यवहार नहीं करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *अग्रवाल नीता, ''बाल विकास'', प्रकाश पब्लिकेशन, आगरा।*
2. *सिंह अरुण कुमार, सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, आगरा।*
3. *शर्मा, डॉ. ललित एवं उपाध्याय डॉ. पुष्पा, ''एडवांस बाल विकास'', स्टार पब्लिकेशन, आगरा ।*
4. *श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. एवं वर्मा डॉ. प्रीति, ''बाल मनोविज्ञान बाल विकास'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*

****